विशेषज्ञ की रिपोर्ट तलब

शहपुरा आरओबी मामला : हाईकोर्ट की सख्ती के बाद टोल 70 प्रतिशत घटे

जबलपुर । मप्र हाईकोर्ट ने राष्ट्रीय राजमार्ग-45 पर शाहपुरा रेलवे ओवरब्रिज के ध्वस्त हिस्से से जुड़े मामले में महत्वपूर्ण अंतरिम आदेश जारी करते हुए स्पष्ट किया कि कोर्ट के संज्ञान के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने शाहपुरा टोल प्लाजा पर यूजर फीस में करीब 70 प्रतिशत की कटौती कर दी है। एसीजे विवेक रूसिया व जस्टिस प्रदीप मित्तल की डिवीजन बेंच ने फिलहाल टोल वसूली पूरी तरह बंद करने से इनकार कर दिया, लेकिन मरम्मत कार्य में तेजी लाने के लिए विशेषज्ञ की राय लेने के निर्देश दिए हैं। हाई कोर्ट ने जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि 55.60 किमी लंबे मार्ग में केवल 4.8 किमी हिस्सा डायवर्ट है, इसलिए पूर्ण टोल माफी का आधार नहीं बनता। हालांकि, एनएचएआई द्वारा 24 जून, 2026 से टोल दरों में लगभग 70 प्रतिशत कमी किए जाने को रिकॉर्ड पर लिया गया।

याचिकाकर्ता की ओर से पौड़ी (एलसी-302) रेलवे गेट खोलने की मांग भी की गई, लेकिन रेलवे ने सुरक्षा, तकनीकी बाधाओं, इंटरलाकिंग सिस्टम, रेलवे बोर्ड व सीआरएस की मंजूरी तथा 8-10 करोड़ रुपये की लागत सहित कई कारण बताते हुए इसका विरोध किया। इन कारणों के आधार

पर हाईकोर्ट ने अंतरिम राहत देने से इनकार कर दिया। मप्र सड़क विकास निगम (एमपीआरडीसी) ने बताया कि क्षतिग्रस्त हिस्से की मरम्मत के लिए निविदा जारी हो चुकी है। हाई कोर्ट ने निर्देश दिया कि अंतिम निर्णय से पहले सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता अखिलेश मिश्रा से यह राय ली जाए कि ओवरब्रिज को सबसे कम समय में सुरक्षित रूप से कैसे चालू किया जा सकता है। रिपोर्ट एक सप्ताह में पेश करने के आदेश दिए गए हैं। कोर्ट ने जनहित याचिका का निराकरण नहीं किया और मामले को निगरानी के लिए 30 अगस्त को अगली सुनवाई हेतु सूचीबद्ध किया है।

पनागर हाईस्कूल के विलय का मामला हाईकोर्ट पहुंचा

कलेक्टर के आदेश के खिलाफ याचिका की 30 जुलाई को होगी अगली सुनवाई

जबलपुर। पनागर स्थित 100 वर्ष पुराने शासकीय वरिष्ठ बुनियादी हाई स्कूल को 10 किलोमीटर दूर सिंगोद हायर सेकेंडरी स्कूल में विलय करने के कलेक्टर के फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई है। याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस एमएस भट्टी की सिंगल बेंच ने शासकीय अधिवक्ता को कलेक्टर से आवश्यक निर्देश लेकर 30 जुलाई को जवाब प्रस्तुत करने का आदेश दिया है।याचिकाकर्ता नीलम श्रीवास्तव, जयसिंह खंगार एवं सोनी लाल प्रजापति की ओर से अधिवक्ता दिनेश उपाध्याय ने न्यायालय में पक्ष रखा। उन्होंने तर्क दिया कि कलेक्टर जबलपुर ने 14 जुलाई 2026 को एक आदेश जारी कर पनागर के इस ऐतिहासिक स्कूल के लगभग 300 विद्यार्थियों को सिंगोद स्कूल में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न केवल मनमाना है, बल्कि पूरी तरह अवैध भी है।अधिवक्ता उपाध्याय ने कोर्ट को बताया कि पनागर एक नगरीय क्षेत्र है, जबकि सिंगोद यहाँ से 10 किलोमीटर दूर ग्रामीण अंचल में स्थित है। छठवीं से दसवीं कक्षा तक के छोटे बच्चों को प्रतिदिन इतनी दूर जाने के लिए मजबूर किया जा रहा है। स्कूल में अध्ययनरत अधिकांश बच्चे गरीब परिवारों से हैं, जिनके अभिभावक बच्चों को इतनी दूर भेजने में आर्थिक व व्यावहारिक रूप से असमर्थ हैं। साथ ही, मानसिक रूप से भी बच्चे रोजाना 20 किमी (आना-जाना) की यात्रा करने में सक्षम नहीं हैं।मामले की गंभीरता को देखते हुए हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को स्थिति स्पष्ट करने के निर्देश दिए हैं। मामले की अगली सुनवाई 30 जुलाई तय की गई है।

गुप्त नवरात्र पर हुई श्रीराम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा

जबलपुर। मां नर्मदा के उत्तर तट गौरीघाट में नव निर्मित मंदिर में वैदिक पद्धति से नव दिवसीय अनुष्ठान का आयोजन किया गया। जिसके पश्चात जगत के नाथ को दिव्य भजन संकीर्तन करके संतों द्वारा उनकी स्तुति वंदन कर श्री सीता-राम की प्राण प्रतिष्ठा की गई। आयोजन के विश्राम दिवस पर विशाल भंडारे का आयोजन मंदिर समिति द्वारा किया गया। इस दौरान अधिष्ठाता आचार्य दीपक द्विवेदी ने बताया कि इस आयोजन में प्रमुख रूप से संस्कारधानी के प्रमुख संतगण, जनप्रतिनिधियों सहित नगर पुलिस अधीक्षक पल्लवी शुक्ला, पं. ओंकार दुबे, ठाकुर विनोद सिसोदिया, किशोर दुबे, पूर्व पार्षद मनीष दुबे, पार्षद शारदा कुशवाहा, पराग दीवान, विनोद भाई

गोपानी, मनसुख भाई आदि शामिल हुए।

उखरी पहुंचे विधायक अभिलाष पाण्डेय, अतिक्रमण कार्रवाई के तरीके पर जताई नाराजगी

जबलपुर। उखरी स्थित आदि प्लाजा के सामने अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई से प्रभावित परिवारों से मिलने पहुंचे उत्तर मध्य विधानसभा के विधायक डॉ. अभिलाष पाण्डेय ने कार्रवाई के तरीके और समय को लेकर नाराजगी जताते हुए इसे संवेदनहीन बताया। उन्होंने कहा कि प्रभावित प्रत्येक परिवार का सम्मानजनक पुनर्वास उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है और जरूरत पड़ने पर गरीबों के अधिकारों की रक्षा के लिए वे हर स्तर पर आवाज उठाएंगे। डॉ. पाण्डेय ने कहा कि न्यायालय के आदेशों का सम्मान करते हुए पुनर्स्थापना की प्रक्रिया मानवीय संवेदनाओं, पारदर्शिता और सुव्यवस्थित तरीके से पूरी की जाएगी। उन्होंने बताया कि केशरवानी समाज के प्रतिनिधियों, जेडीए उपाध्यक्ष प्रशांत केसरवानी, क्षेत्रीय पार्षद सोनिया रंजीत सिंह, एसडीएम, नगर निगम एवं अन्य अधिकारियों के साथ हुई बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के बाद ही पुनर्स्थापना का कार्य प्रारंभ किया जाएगा। साथ ही प्रशासन, जेडीए और केशरवानी समाज के समन्वय से प्रत्येक प्रभावित परिवार के सम्मानजनक पुनर्वास का निर्णय लिया गया।

अखिल भारतीय स्वास्थ्य आयाम प्रशिक्षण वर्ग आज से, देशभर के प्रतिनिधि होंगे शामिल

जबलपुर। महाकौशल सेवा भारती के तत्वावधान में 25 एवं 26 जुलाई को पहली बार अखिल भारतीय स्वास्थ्य आयाम प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन जबलपुर में किया जा रहा है। दो दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग में देश के विभिन्न प्रांतों से प्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता भाग लेंगे। कार्यक्रम में स्वास्थ्य सेवा के विभिन्न आयामों, संगठनात्मक समन्वय, सेवा कार्यों के विस्तार तथा भविष्य की कार्ययोजना पर विचार-विमर्श होगा। पत्रकार वार्ता में डॉ. संजय खन्ना, डॉ. अनुराग सोनी, आत्माराम दीक्षित, बृजमोहन एवं विवेक अग्रवाल ने बताया कि सेवा भारती देशभर में 6,021 स्वास्थ्य सेवा प्रकल्पों के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचा रही है। इनमें 3,728 आरोग्य मित्र,

472 मोबाइल डिस्पेंसरी, 445 ओपीडी, 392 अस्पताल, 235 स्वास्थ्य शिक्षा केंद्र, 232 योग केंद्र, 152 एम्बुलेंस, 138 रोगी सहायता केंद्र, 103 जेनेरिक मेडिकल सेंटर सहित अनेक सेवा प्रकल्प संचालित हैं। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण वर्ग स्वास्थ्य सेवा गतिविधियों के विस्तार और राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय को नई दिशा देने के साथ ही जबलपुर को स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में अहम कदम साबित होगा।

जेडीए सीईओ दीपक कुमार वैद्य को दी भावभीनी विदाई

जबलपुर। जबलपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) के मुख्य कार्यपालिक अधिकारी दीपक कुमार वैद्य के सम्मान में शुक्रवार को प्राधिकरण कार्यालय में विदाई समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर जेडीए अध्यक्ष संदीप जैन ने श्री वैद्य को उनकी नवीन पदस्थापना के लिए शुभकामनाएं देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। समारोह में जेडीए उपाध्यक्ष प्रशांत केशरवानी सहित प्राधिकरण के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी श्री वैद्य को नई जिम्मेदारियों के सफल निर्वहन के लिए शुभकामनाएं देते हुए उनके कार्यकाल की सराहना की।

गोरा बाजार शराब दुकान के पास धर्मस्थल की हुई नपाई, 100 मीटर दायरे में मिलने का दावा

जबलपुर। गोरा बाजार चौराहे पर संचालित शराब दुकान के विरोध में गोरा बाजार संघर्ष समिति के आंदोलन के नौवें दिन समिति की मांग पर राजस्व एवं आबकारी विभाग की मौजूदगी में शराब दुकान के समीप स्थित धर्मस्थल की नपाई कराई गई। तहसीलदार, आरआई, पटवारी, आबकारी एवं पुलिस अधिकारियों की उपस्थिति में हुई नपाई के दौरान समिति के अनुसार धर्मस्थल शराब दुकान से 100 मीटर के दायरे के भीतर पाया गया।

मौके पर अधिकारियों ने पंचनामा तैयार कर क्षेत्रीय नागरिकों के हस्ताक्षर भी कराए। इस दौरान नकूल गुप्ता, पवन यादव, प्रमोद बेन, पवन कनौजिया, हेमंत मलिक, प्रकाश अहिरवार, नीसु कनौजिया, रमेश यादव, राजा ठाकुर, योगेश कनौजिया, समीर महावर, जगदीश अग्रवाल, मनोज पिल्ले, योगेश विनोदिया, वसीम भाईजान, सोम सरवर, ओ.पी. अग्रवाल, मोहन महावर एवं आशु स्वामी सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रीयजन उपस्थित रहे।

संस्कारधानी में कल होगा 'युग प्रवर्तक डॉक्टर हेडगेवार' नाटक का मंचन

जबलपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में संस्कार भारती, जबलपुर महानगर के तत्वावधान में तथा नाद ब्रह्मा संस्था, नागपुर द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक नाट्य प्रस्तुति 'युग प्रवर्तक डॉक्टर हेडगेवार' का मंचन 26 जुलाई को शाम 6 बजे मानस भवन प्रेक्षागृह में होगा। नाटक में संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के जीवन, उनके विचारों, संघ स्थापना की पृष्ठभूमि तथा तत्कालीन परतंत्र भारत की सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाएगा। संस्कार भारती के महाकौशल प्रांत सह महामंत्री निखिल देशकर, प्रांत उपाध्यक्ष विजय मिश्रा, कोषाध्यक्ष मदन पटेल, सह कोषाध्यक्ष सिद्धार्थ शुक्ला, महानगर अध्यक्ष माला सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष प्रभात दुबे, कमलेश यादव, प्रियंका मिश्रा, सौरभ दुबे, आदेश सिंह, साधना तिवारी, आरती दीक्षित, शैलजा सुल्लेरे, कुसुम चौबे, राजेश खरे एवं मुनीश जैन ने नागरिकों, कला प्रेमियों और इतिहास में रुचि रखने वाले लोगों से कार्यक्रम में उपस्थित होने की अपील की है।

लक्ष्मीपुर-संजय नगर अतिक्रमण हटाने पर हाई कोर्ट की अंतरिम रोक

जबलपुर। मप्र हाईकोर्ट ने एमआर फोर लक्ष्मीपुर-संजय नगर क्षेत्र में प्रस्तावित अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई पर अगली सुनवाई तक अंतरिम रोक लगा दी है। जस्टिस मनिन्दर सिंह भट्टी की सिंगल बेंच ने यह भी निर्देश दिया कि यदि किसी निवासी का बिजली कनेक्शन काटा गया है तो उसे तत्काल बहाल किया जाए। मामले की अगली सुनवाई सोमवार को होगी। सुनवाई के दौरान अधिवक्ता रविंद्र कुमार गुप्ता ने करीब 22 पट्टाधारी निवासियों की ओर से हस्तक्षेप आवेदन प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि संबंधित परिवारों को वर्ष 1998 में मध्य प्रदेश नगरीय क्षेत्र के भूमिहीन व्यक्ति अधिनियम, 1984 के तहत 30 वर्ष के पट्टे दिए गए थे, जिनकी अवधि अभी समाप्त नहीं हुई है। उन्होंने न्यायालय को बताया कि क्षेत्र में लगभग 400 परिवार वर्षों से निवास कर रहे हैं तथा नगर निगम को कर अदा करने के साथ बिजली-पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का लाभ ले रहे हैं। आवेदकों ने तर्क दिया कि बेदखली के बजाय शासन की आवासीय योजनाओं के तहत उन्हें नियमित किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि केसरवानी शिक्षा समिति द्वारा भूमि पर अधिकार का दावा करते हुए दायर याचिका में यह अंतरिम आदेश पारित किया गया।

क्राइस्ट चर्च को-एड स्कूल में हुआ स्काउट्स एवं गाइड्स ओरिएंटेशन कार्यक्रम

जबलपुर। क्राइस्ट चर्च को-एड स्कूल, जबलपुर में आज भारत स्काउट्स एवं गाइड्स का ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्काउट्स एवं गाइड्स की मूलभूत जानकारी एवं अनुशासन से परिचित कराना था। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को स्काउट्स एवं गाइड्स की वर्दी (यूनिफॉर्म) सही तरीके से पहनने, स्कार्फ बांधने की विधि, व्यक्तिगत रिकॉर्ड का सुव्यवस्थित रखरखाव तथा संगठन से संबंधित अन्य आवश्यक एवं सामान्य जानकारियाँ प्रदान की गईं। इस अवसर पर जिला मुख्य आयुक्त डॉ. विजयकांत तिवारी एवं डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर राहुल राजपूत ने विद्यार्थियों को स्काउट्स एवं गाइड्स के उद्देश्य, अनुशासन, सेवा भावना तथा संगठन की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और उन्हें सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकगण एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। अंत में सभी ने ऐसे उपयोगी एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम के आयोजन की सराहना की।

गुरु श्रद्धा से ही मिलता है भगवान का साक्षात्कार : ब्रह्मचारी चैतन्यानंदजी

श्रीमद्भागवत कथा में ध्रुव, सती और देवहूति प्रसंगों के माध्यम से दिए संस्कार, समर्पण और अहंकार त्याग के संदेश

हरिभूमि, जबलपुर। श्री बगलामुखी सिद्धपीठ शंकराचार्य मठ सिविक सेंटर मढ़ाताल में आयोजित श्रीमद्भागवत ज्ञान यज्ञ सप्ताह के पावन अवसर पर कथा के द्वितीय दिवस में ब्रह्मचारी श्री चैतन्यानंद जी महाराज ने श्रद्धालुओं को गुरु महिमा, भक्ति और संस्कारों का गूढ़ संदेश दिया। उन्होंने कहा कि गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, समर्पण और विश्वास ही भगवान की प्राप्ति का सबसे सरल एवं श्रेष्ठ मार्ग है। जिस जीवन में गुरु के प्रति निष्ठा होती है, वहां परमात्मा की कृपा स्वतः प्राप्त होती है।

सत्य का स्वरूप ही परमात्मा का वास्तविक तत्व

कथावाचन के दौरान महाराज श्री ने श्रीमद्भागवत के मंगलाचरण का भावार्थ समझाते हुए कहा कि सत्य का स्वरूप ही परमात्मा का वास्तविक तत्व है। सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि भगवान नारायण द्वारा ब्रह्माजी को प्रदान किया गया चतुःश्लोकी भागवत का उपदेश ही ब्रह्मज्ञान का मूल आधार है।

अहंकार ही मनुष्य के पतन का कारण

इसके पश्चात मनु और शतरूपा द्वारा मानव सृष्टि के विस्तार का उल्लेख करते हुए सृष्टि के दिव्य स्वरूप का वर्णन किया।सती चरित्र का प्रसंग सुनाते हुए ब्रह्मचारी चैतन्यानंद जी ने कहा कि अहंकार ही मनुष्य के पतन का सबसे बड़ा कारण है। अहंकार ज्ञान को नष्ट कर देता

है और व्यक्ति को सत्य के मार्ग से भटका देता है।

समन्वय, विश्वास और कर्तव्य ही वास्तविक विवाह

ब्रह्मचारी चैतन्यानंद जी ने कहा कि श्रद्धालुओं से विनम्रता, संयम और सदाचार को जीवन का आधार बनाने का आह्वान किया। देवहूति एवं कर्दम ऋषि के प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि पति-पत्नी के परस्पर समन्वय, विश्वास और कर्तव्य निर्वहन का नाम ही वास्तविक विवाह है। पारिवारिक जीवन तभी सफल होता है, जब उसमें धर्म, प्रेम और त्याग का समावेश हो।

संस्कार, गुरु भक्ति और विश्वास नहीं जाते व्यर्थ

ध्रुव चरित्र का भावपूर्ण वर्णन करते हुए महाराज श्री ने कहा कि माता सुनीति के श्रेष्ठ संस्कार और देवर्षि नारद जैसे सद्गुरु के वचनों पर अटूट विश्वास के कारण ही ध्रुव को भगवान का साक्षात्कार प्राप्त हुआ। इसलिए जीवन में संस्कार, गुरु भक्ति और विश्वास कभी व्यर्थ नहीं जाते, बल्कि यही मनुष्य को परमात्मा तक पहुंचाने का माध्यम बनते हैं।

यह रहे उपस्थित

कथा प्रारंभ होने से पूर्व श्रीमद्भागवत व्यासपीठ का विधिवत पूजन किया गया। इस अवसर पर प्रभा यादव, डॉ. संजय मिश्रा, पद्मा मेनन, बीके नीति पटेल, अमित प्रतीक्षा सिंह, घनश्याम मिश्रा, नीरज, वर्षा साहू, गोविंदा साहू, शशिकांत शिखा तिवारी, रिचा हेमंत मिश्रा, तुलसी अवस्थी, शिव गुप्ता, सुनील गुप्ता, पुष्पेंद्र सिंह परिहार, आशीष चौकसे, वैभव दुबे, अंकित दीक्षित, सोनू कुरेले, राहुल मौर्य ,राज गुप्ता, लकी शर्मा, रोहित तिवारी, गौरव चौबे, अभिषेक उपाध्याय, मीडिया प्रभारी मनोज सेन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

विट्ठल वारी यात्रा का मुख्य आयोजन आज

जबलपुर। आषाढ़ी कार्तिकी वारी महामंडल द्वारा आयोजित प्रतिवर्ष अनुसार आज 25 जुलाई को शाम 4:00 बजे दत्त मंदिर से वारी यात्रा निकलेगी जिसमें हजारों श्रद्धालु शामिल होंगे, युवा वर्ग द्वारा बैंड, ढोल का प्रदर्शन किया जाएगा, पंढरपुर की तर्ज पर यह यात्रा दत्त मंदिर, गोल बाजार से मालवीय चौक, लॉर्डगंज, बड़ा फुहारा होते हुए हनुमानताल स्थित विट्ठल रखुमाई मंदिर पहुंचेगी। यात्रा में शामिल होने की अपील संतोष गोडबोलं, स्वाति गोडबोले, रंजन वर्तक, हेमंत पोहरकर, राजेश, प्रवीण, श्रीकांत, विद्येश वापकार, विवेक आदि ने की है।

रजिस्ट्रेशन गुमी सूचना

सूचित किया जाता है कि मैं रोशनी झारिया गोरखपुर ककरैया तलैया जबलपुर निवासी हूं और मैं नर्सिंग छात्रा हूँ मेरा ओरिजनल रजिस्ट्रेशन दिनाँक 23/06/2026 को गोरखपुर के रास्ते में कही गुम हो गया है राजस्ट्रेशन नम्बर V-72116. है जिस किसी भी व्यक्ति को मिले इस मो.न. 9300985513 पर सम्पर्क करें।

रोशनी झारिया
गोरखपुर ककरैया तलैया जबलपुर

नाम सुधार सूचना

सर्वसाधारण को सचित किया जाता है कि मैं, रशवीन होरा निवासी 532 प्रकाश गंगा, गोरखपुर, जबलपुर - 482001, ने भविष्य के सभी उद्देश्यों दस्तावेजों के लिए अपना नाम बदलकर 'रशवीन कौर सलूजा' कर लिया है।

लाचार परिजनों की दर्दनाक तस्वीर

70 करोड़ का बजट या भ्रष्टाचार का स्ट्रेचर

बिरसा मुंडा मेडिकल कॉलेज में चादर पर घिसट रही जिंदगी

शहडोल।

संभागीय मुख्यालय का बिरसा मुंडा शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय कहने को तो संभाग का सबसे बड़ा और हाइटेक अस्पताल है, लेकिन हकीकत में यह सफेद हाथी से ज्यादा कुछ नहीं साबित हो रहा, करोड़ों रुपए के भारी-भरकम बजट और कागजी दावों के नीचे यहां की बुनियादी व्यवस्थाएं दम तोड़ चुकी हैं। हद तो तब हो गई जब अस्पताल में भर्ती होने आए एक गंभीर मरीज को एक अदद स्ट्रेचर तक नसीब नहीं हुआ और बेबस परिजनों को चादर व कंबल का झूला बनाकर मरीज को डॉक्टर के चैंबर और वार्ड तक ढोने के लिए मजबूर होना पड़ा। क्या यही है संभाग के सबसे बड़े अस्पताल की चमचमाती हाई-टेक व्यवस्था?

चादर पर घिसटने को मजबूर मरीज

शर्मनाक पहलू यह है कि हाल ही में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा संयुक्त रूप से नेशनल आयुष मिशन के तहत मेडिकल कॉलेज के बुनियादी ढांचे और मूलभूत सुविधाओं के कायाकल्प के लिए 70 करोड़ रुपए की भारी-भरकम राशि स्वीकृत की गई है। लेकिन सवाल यह उठता है कि करोड़ों रुपए का यह विकास आखिर किसकी जेब में पच रहा है? जब अस्पताल के पास मरीज को वार्ड तक ले जाने के लिए 1000-2000 रुपए का

स्ट्रेचर या व्हीलचेयर तक मौजूद नहीं है, तो फिर 70 करोड़ का यह ढिंढोरा किसके लिए पीटा जा रहा है? क्या यह बजट केवल कागजी खानापूरी और बड़े अधिकारियों व ठेकेदारों की जेबें भरने के लिए आया है?

200 मीटर दूर की जनप्रतिनिधि ही लाचार

चिकित्सा महाविद्यालय की संवेदनहीनता की यह खौफनाक बानगी मेडिकल कॉलेज से महज 200 मीटर की दूरी पर स्थित ग्राम पंचायत कुदरी से सामने आई है। कुदरी के वार्ड नंबर 11 की पंच सावित्री कुशवाहा अपनी सास की कमर की हड्डी टूटने पर इलाज के लिए शहडोल मेडिकल कॉलेज पहुंची थीं। कमर की हड्डी टूटी होने के कारण मरीज का एक-एक पल असहनीय दर्द में बीत रहा था। सोचिए, जो महिला खुद एक जनप्रतिनिधि है, जो अपने वार्ड के लोगों के सुख-दुख में हमेशा आगे रहती है, जब उसे अपने ही परिजनों के इलाज के लिए संभाग के सबसे बड़े मेडिकल कॉलेज में गिड़गिड़ाना पड़ रहा है और बेबस होकर अपनी सास को चादर के सहारे घसीटकर डॉक्टर तक ले जाना पड़ रहा है, तो अनूपपुर, उमरिया और दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों से आने वाले गरीब, अशिक्षित आदिवासियों का यहाँ क्या हश्र होता होगा? इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

कमीशनखोरी में मग्न प्रबंधन, भगवान भरोसे मरीज!

मेडिकल कॉलेज प्रबंधन की इस घोर लापरवाही ने स्वास्थ्य विभाग की पोल खोलकर रख दी है। अस्पताल में न तो वार्ड बॉय समय पर मिलते हैं, न ही व्हीलचेयर और स्ट्रेचर की कोई सुचारू व्यवस्था है। इमरजेंसी के बाहर स्ट्रेचर धूल फांक रहे होते हैं या गायब रहते हैं, और पूछने पर कर्मचारियों का रवैया अमानवीय होता है। जनप्रतिनिधि सावित्री कुशवाहा ने अस्पताल प्रशासन की इस तानाशाही और लचर व्यवस्था पर कड़ा आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि जब 200 मीटर दूर के स्थानीय लोगों को यह प्रताडना झेलनी पड़ रही है, तो दूर-दराज से आने वाले दूर-दराज के गरीबों का यहाँ क्या हाल होता होगा!

बिजली चोरी रोकने पहुंची टीम से मारपीट करने वाला दोषी करार

शहडोल। विशेष न्यायालय (विद्युत अधिनियम) बुढ़ार के विशेष न्यायाधीश सुशील कुमार अग्रवाल ने बिजली चोरी एवं शासकीय कार्य में बाधा पहुंचाने के चर्चित मामले में महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए आरोपी मोहम्मद इसरार अंसारी को विभिन्न धाराओं में दोषी ठहराया है। न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 353, 332 तथा विद्युत अधिनियम, 2003 की धारा 135(1)(क) के तहत दोषसिद्धि दर्ज करते हुए कारावास एवं अर्थदंड से दंडित किया, जबकि धारा 506 (भाग-2) के आरोप से आरोपी को दोषमुक्त किया। यह निर्णय 20 जुलाई 2026 को पारित किया गया। मामले में राज्य शासन की ओर से अपर लोक अभियोजक आलोक राय ने पैरवी की, जबकि आरोपी की ओर से अधिवक्ता सीताराम गुप्ता ने पक्ष रखा। अभियोजन के अनुसार 3 मार्च 2023 की रात लगभग 9 बजे मध्यप्रदेश विद्युत वितरण कंपनी की जांच टीम बुढ़ार क्षेत्र के भुतहीटोला में बिजली चोरी की शिकायत पर पहुंची थी। टीम में कनिष्ठ अभियंता सुखबदन विश्वकर्मा सहित विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल थे।

बीच शहर ज्वेलरी शॉप में चोरी, शटर तोड़कर लाखों के जेवर और नकदी ले उड़ा बदमाश

रीवा। शहर के सबसे व्यस्त और संवेदनशील माने जाने वाले सिविल लाइन थाना क्षेत्र में चोरों ने एक बार फिर पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती देते हुए बीच शहर स्थित ज्वेलरी शॉप को निशाना बनाया। पदमधर कॉलोनी में संचालित श्री सिद्धिविनायक ज्वेलरी शॉप में गुरुवार-शुक्रवार की दरमियानी रात अज्ञात बदमाश शटर तोड़कर दुकान के भीतर घुस गया और शोकेस के कांच तोड़ते हुए सोने-चांदी के आभूषणों के साथ नकदी लेकर फरार हो गया। पूरी वारदात दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। घटना की सूचना मिलते ही सिविल लाइन थाना पुलिस, फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट और साइबर सेल की टीम मौके पर पहुंची तथा वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाकर जांच शुरू कर दी। दुकान संचालक संतोष सोनी के पुत्र ओम सोनी ने बताया कि उनकी ज्वेलरी शॉप पदमधर कॉलोनी में संचालित होती है। प्रतिदिन की तरह गुरुवार रात दुकान बंद कर सभी लोग अपने घर चले गए थे। तड़के करीब 3:20 बजे एक अज्ञात युवक दुकान के सामने पहुंचा। उसने पहले शटर को क्षतिग्रस्त कर अंदर प्रवेश किया। इसके बाद दुकान के भीतर रखे शोकेस के कांच तोड़े और उनमें रखे सोने-चांदी के आभूषणों के साथ गल्ले में रखी नकदी समेटकर फरार हो गया।

रिश्वत कांड में फिर फंसा जेई

लोकायुक्त ने दर्ज की एफआईआर

शहर संभाग के पदस्थ जेई प्रदीप दुबे पर उपभोक्ता से कार्रवाई के नाम पर 50 हजार रिश्वत मांगने का आरोप, बिजली विभाग ने कार्रवाई के नाम पर की खानापूर्ति

रीवा।

बिजली विभाग में कार्रवाई के नाम पर कथित वसूली का मामला एक बार फिर सुर्खियों में है। शहर संभाग में पदस्थ जूनियर इंजीनियर (जेई) प्रदीप दुबे के खिलाफ 50 हजार रुपये रिश्वत मांगने में विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) रीवा ने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किया है। मामले में एक निजी व्यक्ति राज पटेल को भी सहआरोपी बनाया गया है। शिकायत के सत्यापन के दौरान रिश्वत मांगने से जुड़ी बातचीत की ऑडियो रिकॉर्डिंग, ट्रांसक्रिप्ट और अन्य साक्ष्य एकत्र किए गए, जिसके आधार पर लोकायुक्त ने प्रथम दृष्टया आरोप सही मानते हुए अपराध दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। प्रकरण दर्ज होने के बाद लोकायुक्त के पत्र पर बिजली विभाग ने जेई प्रदीप दुबे को शहर संभाग से हटाकर पश्चिम संभाग के हिन्नौता डीसी में पदस्थ कर दिया है।लोकायुक्त में दर्ज शिकायत के अनुसार संजय नगर निवासी विकास सिंह ने 22 जून को पुलिस अधीक्षक, विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) को लिखित आवेदन दिया था। शिकायत में बताया गया कि उनके मौसेरे भाई बालेन्द्र सिंह के रतहरा स्थित मकान पर बिजली विभाग के जेई प्रदीप दुबे जांच के लिए पहुंचे थे। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बिजली चोरी का मामला बताते हुए कड़ी कार्रवाई करने की चेतावनी दी। शिकायतकर्ता का आरोप है कि कार्रवाई से बचाने के बदले जेई ने 50 हजार रुपये रिश्वत की मांग की। शिकायत मिलने के बाद उप पुलिस अधीक्षक प्रवीण सिंह परिहार ने शिकायत का सत्यापन शुरू कराया। शिकायतकर्ता को एक डिजिटल वॉयस रिकॉर्डर उपलब्ध कराया गया और रिश्वत मांगने संबंधी बातचीत रिकॉर्ड करने के निर्देश दिए गए। 22 जून की शाम शिकायतकर्ता जेई प्रदीप दुबे एवं उनके साथ मौजूद निजी व्यक्ति राज पटेल से मिला। शिकायत के अनुसार इस दौरान दोनों ने 50 हजार रुपये लेने पर सहमति जताई। पूरी बातचीत डिजिटल रिकॉर्डर में रिकॉर्ड कर ली गई। अगले दिन शिकायतकर्ता ने सीलबंद रिकॉर्डर लोकायुक्त कार्यालय में जमा कराया। पंच साक्षियों की मौजूदगी में रिकॉर्डर खोला गया और रिकॉर्डेड बातचीत सुनी गई। शिकायतकर्ता ने अपनी तथा आरोपियों की आवाज की पहचान की, जिसके बाद पूरी बातचीत का ट्रांसक्रिप्ट तैयार किया गया। रिकॉर्डिंग की चार सीडी तैयार कर उन्हें भी विधिवत सीलबंद किया गया।

जांच में प्रथम दृष्टया सही पाए गए आरोप

लोकायुक्त की जांच में शिकायत, ऑडियो रिकॉर्डिंग, ट्रांसक्रिप्ट और पंचनामा के आधार पर प्रथम दृष्टया यह पाया गया कि जेई प्रदीप दुबे एवं निजी व्यक्ति राज पटेल ने अपने पद और प्रभाव का उपयोग करते हुए शिकायतकर्ता से अवैध रूप से 50 हजार रुपये लेने की सहमति दी थी। इसके आधार पर दोनों के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 (संशोधित 2018) की धारा-7 तथा भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 61(2) के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना प्रारंभ कर दी गई।

लोकायुक्त के पत्र पर विभाग ने हटाया

प्रकरण दर्ज होने के बाद विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) के पुलिस अधीक्षक ने अधीक्षण अभियंता, बिजली विभाग को पत्र भेजा। इसके बाद विभाग ने प्रदीप दुबे को शहर संभाग से हटाकर पश्चिम संभाग के हिन्नौता डीसी में स्थानांतरित कर दिया। हालांकि विभाग ने इस मामले को सार्वजनिक रूप से उजागर नहीं किया और केवल स्थानांतरण की कार्रवाई की। जबकि मामला दर्ज होने के बाद उक्त जीप पर विभाग द्वारा निलंबन की कारवाई किया जाना चाहिए था।

पहले भी इसी कुर्सी पर फंस चुके हैं जेई

यह पहला मामला नहीं है। जिस पद पर वर्तमान में प्रदीप दुबे पदस्थ थे, उसी पद पर पहले जेई किशोर त्रिपाठी भी रिश्वत लेते हुए लोकायुक्त की कार्रवाई का सामना कर चुके है। उस समय भी मामला सामने आने के बाद उनका स्थानांतरण किया गया था।

लगातार दूसरी बार एक ही पद पर पदस्थ अधिकारी के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप सामने आने से बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं।

मामला दबाए बैठा है विभाग

बिजली विभाग के जेई के खिलाफ लोकायुक्त ने प्रकरण दर्ज किया लेकिन मामले का खुलासा नहीं किया। सूत्रों की मानें तो प्रदीप के अलावा और भी अधिकारियों की शिकायतें हैं। विभाग मामले को उजागर होने के बाद ही शहर संभाग से जेई को इधर-उधर कर देता है।

विधानसभा में गूंजा कटनी में शासकीय मेडिकल कॉलेज का मुद्दा, विधायक ने दागे सवाल

उम्मीदों में वज्राघातः जिले में सरकारी मेडिकल कॉलेज की थी मांग, सरकार ने कहा कोई विचार नहीं

हरिभूमि न्यूज ⏭ कटनी

जिले में कई वर्षों से सरकारी मेडिकल कॉलेज बनाये जाने की उम्मीद जनता लगाये बैठी थी। सालों के इंतजार के बाद नागरिकों की उम्मीद फलीभूत तो हुई लेकिन इस सौगात के मिलने की खुशी को सरकार ने किरकिरा बना दिया। जन भावनाओं के विपरीत जिले में पब्लिक प्राईवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मोड पर मेडिकल कॉलेज का निर्माण कराया जा रहा है। मेडीकल कॉलेज के पीपीपी मोड के मुद्दे पर कांग्रेस के पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ विधायक लखन घनघोरिया ने ध्यानाकर्षण के माध्यम से विधानसभा सदन में उठाया।

श्री घनघोरिया ने आरकेडीएफ की पारिवारिक संस्था स्वामी विवेकानंद फाउंडेशन से हुए अनुबंध पर भी सवाल उठाए,उन्होंने सरकार से पूंछा कि इस संस्था से जुड़ी कंपनियों पर क्या एसटीएफ ने फर्जी मार्कशीट के मुकदमे दर्ज किए है? क्या सरकार इनसे अनुबंध निरस्त पर विचार कर रही है? उन्होंने पूंछा कि ऐसी संदेहास्पद संस्था से अनुबंध से क्या जनता को कोई लाभ हो सकेगा?उन्होंने पूंछा की क्या यह संस्था

शासन के पैसों से मेडिकल कॉलेज खोलकर अपने हितो को प्राथमिकता देगी? क्या कटनी जिले की जनता की माँग PPP मेडिकल कॉलेज नहीं शासकीय मेडिकल कॉलेज है? उन्होंने सरकार को बताया की कटनी में इस कॉलेज खोले जाने से जनता में रोष व्याप्त है।

उप मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ मंत्री राजेंद्र शुक्ला ने जो जवाब दिए है वह कटनी के लिए अत्यंत निराशाजनक है। उन्होंने सदन में बताया की संस्था के विरुद्ध वर्तमान में कोई भी जांच एसटीएफ में नहीं चल रही है जबकि यह सर्विदित है एसटीएफ ने भोपाल पर आरकेडीएफ पर फर्जी मार्कशीट बनाने को लेकर प्रकरण दर्ज किया है और स्वामी विवेकानंद फाउंडेशन उन्ही की पारिवारिक संस्था है। स्वास्थ्य मंत्री ने अपने जवाब में स्पष्ट किया है कि प्रदेश के प्राइवेट मेडिकल कॉलेज से भी जनता को लाभ मिलता है इस कारण यह शंका की यह संस्था द्वारा निर्मित शासकीय मेडिकल कॉलेज जनता का इलाज संजीदगी से नहीं करेगा यह शंका निर्मूल है। राज्य शासन ने यह निर्णय वित्तीय संसाधाओं के बेहतर उपयोग के लिए लिया है,सबसे निराशाजनक जवाब को स्वास्थ मंत्री ने दिया वह यह है की पीपीपी मोड के मेडिकल कॉलेज की जगह शासकीय मेडिकल कॉलेज पर कोई विचार नहीं है,वर्तमान में निर्माण का कार्य प्रारंभ हो चुका है। जनता में पीपीपी मोड पर खुल रहे शासकीय मेडिकल कॉलेज को लेकर कोई आक्रोश नहीं है।

जनता के साथ हुआ छलावा, जनप्रतिनिधियों ने किये झूठे वादे

सरकार से आए जवाब पर कांग्रेस नेता दिव्यांशु मिश्रा अंशु ने कटनी की जनता को छलने वाला एवं निराशाजनक बताया, कटनी के विभिन्न राजनातिक दल एवं कांग्रेस के छात्र संगठन एनएसयूआई ने समय समय पर जनता को साथ लेकर शासकीय मेडिकल कॉलेज खोले जाने को लेकर विभिन्न आंदोलन किए थे। खजुराहो सांसद वीडी शर्मा एवं मुडवारा विधायक संदीप जयस्वाल ने भी जनता से समय समय पर शासकीय मेडिकल कॉलेज खोले जाने को लेकर झूंठा वादा किया था। दिव्यांशु मिश्रा ने कहा सरकार के इस निर्णय का कांग्रेस पुरजोर विरोध करती है जब संस्था संदेहास्पद नहीं थी तो मुख्यमंत्री जी ने अपना भूमिपूजन का कार्यक्रम क्यो निरस्त किया?क्यो क्षेत्रीय नेतृत्व ने जनता को मेडिकल कॉलेज का सपना दिखाया? जनता के तमाम आंदोलन और प्रदर्शनों को सरकार ने नकारते हुए जो जवाब दिए है उसे लेकर छात्रहितों एवं जनहित में निरंतर लड़ाई लड़ी जाएगी।

बीएसी पर धमकी देने व पद के दुरुपयोग का आरोप

हरिभूमि न्यूज - नरसिंहपुर। सरकार द्वारा शिक्षा व्यवस्थाएं दुरूस्त रखने तथा अच्छी शिक्षा व्यवस्थाएं देने के लिए प्रयासरत है परन्तु स्कूल शिक्षा मंत्री के गृह जिले में शिक्षा विभाग के भीतर अंदरूनी खींचतान और विवाद थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। स्कूल में पदस्थ दो महिला शिक्षिकाओं ने एक ब्लॉक अकादमिक समन्वयक (बीएसी) पर अनुचित हस्तक्षेप, पद के दुरुपयोग और मानसिक प्रताड़ना के गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक को एक लिखित आवेदन सौंपा है। शिक्षिकाओं का कहना है कि विभागीय कार्यप्रणाली में अनावश्यक दखलअंदाजी के कारण स्कूल का माहौल असहज हो रहा है। जिला प्रशासन को चाहिए कि महिला शिक्षिकाओं द्वारा दिए गए आवेदन पर विचार करते हुए जांच पड़ताल कर ठोस कार्रवाई करे जिससे आपसी कलह का प्रभाव स्कूल में पड़ने वाले विद्यार्थियों पर ना पड़े।

मामला इस प्रकार

पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर शिक्षिका प्रज्ञा तिवारी और नासिरा बेगम (नाजरा बेगम) ने शिकायत दर्ज कराई है। शिक्षिका प्रज्ञा तिवारी ने बताया कि उनके ही स्कूल में कार्यरत शिक्षिका सिया झारिया के पति विनोद कुमार झारिया बीआरसी कार्यालय में बीएसी के पद पर पदस्थ हैं। कथित तौर पर स्कूल के आंतरिक व अकादमिक मामलों में दखल देते हैं। शिकायतकर्ता शिक्षिकाओं का दावा है कि स्कूल से जुड़ी किसी भी सामान्य बातचीत या पत्राचार के दौरान भी उक्त अधिकारी द्वारा हस्तक्षेप किया जाता है और फोन करके अनुचित दबाव बनाने का प्रयास किया जाता है। शिक्षिकाओं ने अपनी शिकायत में इस बात की भी गंभीर आशंका व्यक्त की है कि उन पर दबाव बनाने की नीयत से किसी झूठे मामले में फंसाने का प्रयास किया जा सकता है।

मानसिक प्रताड़ना का आरोप

शिक्षिकाओं द्वारा दिए गए आवेदन में बताया गया है कि उनका ऐसा कोई गंभीर मामला नहीं है, फिर भी अधिकारी द्वारा अपने पद और प्रभाव का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। फोन पर लगातार मिल रही धमकियों से वे अत्यधिक मानसिक तनाव में हैं, जिससे स्कूल का शैक्षणिक माहौल भी प्रभावित हो रहा है। उन्होंने बताया कि उनके पास बातचीत के साक्ष्य के तौर पर कॉल रिकॉर्ड सुरक्षित हैं। आवेदन के माध्यम से शिक्षिकाओं ने भविष्य में किसी झूठे या जातिगत विद्वेष से भरे मामले में फंसाए जाने की आशंका जताते हुए निष्पक्ष जांच और सुरक्षा की मांग की है। विद्यार्थियों की शिक्षा देने वाली शिक्षिकाएं आपसी विवाद में उल्झी रहेंगी तो विद्यार्थियों के अध्यापन का कार्य भी व्यवस्थित नही हो सकेगा। प्रशासन को चाहिए कि मामले की जांच पड़ताल कर ठोस कार्रवाई करते हुए शिक्षिकाओं का आपसी समन्वय बनाया जाए। जिससे आपसी विवाद का प्रभाव विद्यार्थियों पर ना पड़े।

नीट पेपर लीकः यूथ कांग्रेस और एनएसयूआई का उग्र प्रदर्शन, कलेक्ट्रेट घेराव के दौरान पुलिस से हुई झड़प

सतना।

देश भर में चर्चित नीट पेपर लीक मामले और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर सतना में यूथ कांग्रेस और एन एसयूआई का जोरदार आक्रोश देखने को मिला। शुक्रवार को छात्रों और कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट का घेराव किया। प्रदर्शन के दौरान स्थिति तब बेहद तनावपूर्ण हो गई जब उग्र कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट के मुख्य द्वार पर लगाए गए बैरिकेड्स तोड़ने का प्रयास किया और पुलिस के साथ तीखी धक्का-मुक्की व झड़प हुई। आंदोलन की शुरुआत प्रेम नगर अंडर ब्रिज के पास से हुई,जहाँ सैकड़ों की संख्या में छात्र-छात्राएं और कांग्रेस कार्यकर्ता एकत्र हुए। एनएसयूआई और कांग्रेस पार्टी के बैनर तले कलेक्ट्रेट तक एक विशाल जुलूस निकाला गया। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि देश की शिक्षा व्यवस्था में लगातार हो रही गड़बड़ियों से युवाओं का भविष्य अंधकारमय होता जा रहा है। जुलूस के दौरान केंद्र व प्रदेश सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। प्रदर्शन में शामिल नेताओं ने दावा किया कि वर्ष 2013 के बाद जिले में छात्रों का ऐसा ऐतिहासिक और विशाल आंदोलन पहली बार देखा गया है,जिसमें बड़ी संख्या में छात्राओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

कलेक्ट्रेट पहुंचने पर जब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश की,तो माहौल गर्मा गया। बैरिकेड्स हटाने को लेकर पुलिस और कार्यकर्ताओं के बीच भारी रस्साकसी और तीखी बहस हुई। इसी आपाधापी के बीच उग्र कार्यकर्ताओं द्वारा कोतवाली टीआई की गाड़ी में तोड़फोड़ करने का मामला भी सामने आया। स्थिति को बेकाबू होते देख पुलिस ने मुस्तैदी दिखाई और बल प्रयोग कर भीड़ को नियंत्रित किया। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहीं वरिष्ठ कांग्रेस नेत्री डॉ.रश्मि सिंह सहित लगभग एक दर्जन कार्यकर्ताओं को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। अंत में,आंदोलनकारियों ने प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री को तत्काल पद से हटाने और देश की शिक्षा व्यवस्था में कड़े सुधार की मांग की।

रेगिस्तान की तपती रेत, पानी के बिना लंबे सफर और झुलसा देने वाली धूप सदियों से ऊंट इन मुश्किल हालात में भी मजबूती से खड़े रहने के लिए जाने जाते रहे हैं। लेकिन, अब हालात इतने बदल चुके हैं कि प्रकृति के सबसे मजबूत जीवों में गिने जाने वाले ऊंट भी जलवायु परिवर्तन की मार नहीं झेल पा रहे।

जिन ऊंटों को गर्मी नहीं हरा सकी, अब क्लाइमेट चेंज ले रहा जान

मोगादिशु। अत्यधिक गर्मी ने उनकी जिंदगी को संकट में डाल दिया है और अफ्रीका के कई हिस्सों से सामने आ रही तस्वीरें बेहद चिंताजनक हैं। दुनिया के लगभग 80 फीसदी एक कूबड़ वाले ऊंट उत्तर अफ्रीका और हॉर्न ऑफ अफ्रीका के क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इन्हें हमेशा से इसलिए पाला जाता रहा, क्योंकि ये बेहद गर्म मौसम में भी आसानी से जीवित रह सकते हैं।

लेकिन, अब जलवायु परिवर्तन ने उनकी इस क्षमता को भी चुनौती दे दी है। हालिया शोध के मुताबिक सोमालिया के उत्तरी क्षेत्र सूलमें सूखे और रिकॉर्ड गर्मी के कारण करीब 73 फीसदी ऊंटों की मौत हो चुकी है।

तड़प तड़प कर तोड़ रहे दम

पानी की कीमतें 2000 फीसदी से अधिक बढ़ी

हालात इतने खराब हैं कि वहां पानी की कीमतें 2000 फीसदी से अधिक बढ़ गई हैं। इस अत्यधिक गर्मी से ऊंटों के व्हाइट ब्लड सेल्स और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होने लगती है। उनका मेटाबॉलिज्म धीमा पड़ जाता है, वे खाना-पीना कम कर देते हैं और धीरे-धीरे बीमार होकर मौत के मुंह में चले जाते हैं।

ऊंटों के पैरों में पड़ रहे दर्दनाक छाले

एक रिपोर्ट की मानें तो अफ्रीका में तापमान 50 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंचने लगा है। इसका असर अब उन ऊंटों पर भी साफ दिखाई दे रहा है, जिन्हें कभी रेगिस्तान का सबसे मजबूत साथी माना जाता था। भीषण गर्मी के कारण उनके पैरों में दर्दनाक छाले पड़ रहे हैं, आंखों से लगातार पानी बह रहा है और तपती रेत पर बैठते ही उनकी त्वचा झुलसने लगती है। इतना ही नहीं शरीर के बाल तक झड़ने लगे हैं और कई ऊंट तड़प-तड़प कर दम तोड़ रहे हैं।

तड़प-तड़प कर दम तोड़ रहे ऊंट

उत्तर-पूर्वी इथियोपिया के अफार क्षेत्र में रहने वाले 40 वर्षीय अली उमर पिछले कई वर्षों से करीब 500 ऊंटों की देखभाल कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि पहले जो हवा गर्मी से राहत देती थी, अब वही आग के थपेड़ों जैसी महसूस होती है। उनके मुताबिक बढ़ते तापमान ने ऊंटों की हालत इतनी खराब कर दी है कि पिछले एक महीने में ही उन्होंने अपने आठ छोटे ऊंटों को खो दिया। अली कहते हैं कि ऊंटों के पैरों में छाले पड़ रहे हैं, आंखों से पानी बह रहा है और गर्म रेत उनके शरीर को जला रही है।

रोचक खबरें

जापान में मिला 35 लाख साल पुराना रहस्यमयी जीव

टोक्यो। 35 लाख साल से जमीन के नीचे दफन था एक ऐसा रहस्य, जिसने वैज्ञानिकों की नींद उड़ा दी है। क्या आप जानते हैं कि जिस जापान को हम आज देखते हैं, लाखों साल पहले वहां खौफनाक और विशालकाय 'जल-दानव' राज करते थे? लगभग 30 साल पहले मिली 3 हड्डियों के विश्लेषण से अब एक ऐसा सच सामने आया है, जिसने जीव विज्ञान के इतिहास को बदल कर रख दिया है। जापान के अजिमू इलाके में 1995 से 1997 के बीच खुदाई के दौरान 3 दुर्लभ हड्डियां पाई गई थीं। ये अवशेष त्सुबुसुगावा फॉर्मेशन नाम की प्राचीन झील की परतों में मिले थे। उस समय वैज्ञानिकों को अंदाजा नहीं था कि ये हड्डियां किसकी हैं, इसलिए इन्हें अस्थायी रूप से एंड्रियास जीनस में रख दिया गया था। ये सैलामैंडर की एक बहुत बड़ी प्रजाति है। इसमें दुनिया के सबसे बड़े जीवित उभयचर शामिल हैं। हाल ही में क्योटो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने आधुनिक तकनीक और व्यापक अध्ययनों की मदद से इन जीवाश्मों की बारीकी से जांच की। जांच में पता चला कि इस सैलामैंडर की बीच वाले शरीर की रीढ़ की हड्डी की बनावट अब तक मिले किसी भी विशाल सैलामैंडर से पूरी तरह अलग थी। इसी वजह से वैज्ञानिकों ने इसे एक बिल्कुल नई प्रजाति और जीनस घोषित किया और नाम दिया- 'लिम्नोस्पोंडिलस अजिमुएन्सिस'। शोधकर्ताओं के अनुसार, यह रहस्यमयी जीव बहती नदियों की जगह शांत झीलों और दलदली इलाकों में रहता था। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह जीव करीब 3.6 फीट यानी 1.1 मीटर तक लंबा रहा होगा। ये खोज एशिया के जीवाश्म रिकॉर्ड में पिछले 2 करोड़ सालों से चली आ रही कमी को पूरा करती है।

सिर्फ आषाढ़ में दिखती है यह रहस्यमयी पीली चिड़िया, खजूर पर बनाती है खूबसूरत घोंसला

भरतपुर। आषाढ़ माह में भरतपुर के ग्रामीण इलाकों में एक अनोखी और दुर्लभ चिड़िया लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। स्थानीय भाषा में इसे आषाढ़ की चिड़िया कहा जाता है। यह चिड़िया साल भर में केवल इसी मौसम में दिखाई देती है। जिसके कारण इसका यह नाम प्रचलित हो गया है। ग्रामीणों के अनुसार, जैसे ही आषाढ़ का महीना आता है यह पक्षी अचानक नजर आने लगता है और कुछ समय बाद फिर गायब हो जाता है। दिखने में यह चिड़िया आम गौरैया जैसी लगती है, लेकिन इसका हल्का पीला रंग इसे खास और अलग पहचान देता है। इसकी चमकदार पीली आभा और शांत स्वभाव लोगों को आकर्षित करता है। यही वजह है कि जब भी यह चिड़िया दिखाई देती है गांव के लोग इसे देखने के लिए उत्सुक हो जाते हैं। इस चिड़िया की सबसे खास बात इसका घोंसला बनाने का तरीका है .यह मुख्य रूप से खजूर के पेड़ों पर अपने सुंदर और सलीकेदार घोंसले बनाती है। खजूर के लंबे और मजबूत पेड़ों की ऊंचाई इसे सुरक्षा प्रदान करती है, जिससे इसके घोंसले सुरक्षित रहते हैं। इसके बनाए घोंसले न केवल मजबूत होते हैं बल्कि देखने में भी बेहद आकर्षक लगते हैं। यह चिड़िया आषाढ़ के मौसम में ही अपने प्रजनन के लिए यहां आती है। इस दौरान यह घोंसले बनाकर अंडे देती है और कुछ समय बाद अपने बच्चों के साथ फिर कहीं और चली जाती है। यही कारण है कि यह चिड़िया साल के अन्य महीनों में शायद ही कभी देखने को मिलती है। प्रकृति प्रेमियों के लिए यह चिड़िया खास महत्व रखती है। यह अपने सुंदर रंग और घोंसले के लिए जानी जाती है, लेकिन इसकी मौसमी उपस्थिति और व्यवहार इसे और भी रोचक बनाते हैं। भरतपुर के गांवों में आषाढ़ के महीने में दिखने वाली यह हल्के पीले रंग की दुर्लभ चिड़िया प्रकृति का एक अनोखा उपहार है, जो हर साल कुछ समय के लिए आकर लोगों को अपनी सुंदरता और विशेषता से मंत्रमुग्ध कर देती है।

अद्भुत

इतिहास के पन्नों में दफ्न है नालंदा के अमावा स्टेट राजमहल की कहानी

52 कोठी और 53 दरवाजों का अनसुलझा रहस्य

पटना। बिहार के नालंदा जिले में एक ऐसा खंडहर है, जो कभी मगध की सबसे रईस रियासत हुआ करता था। हम बात कर रहे हैं अस्थावां के 200 साल पुराने अमावा स्टेट राजमहल की। 22 एकड़ में फैले इस महल को लेकर कहा जाता है कि इसमें 52 कोठियां और 53 विशाल दरवाजे थे। आज भले ही यह ऐतिहासिक धरोहर वीरान पड़ी है, लेकिन इसकी जर्जर दीवारें अपने भीतर शाही शानो-शौकत और कई अनसुलझे रहस्य समेटे हुए हैं। यह राजमहल अपने दौर की शानदार इंजीनियरिंग और आधुनिकता का बेमिसाल नमूना था। महल और कर्मचारियों के घरों को रोशन करने के लिए यहां बिहार का पहला निजी पावर हाउस बनाया गया था, जिसे कोलकाता से बिजली सप्लाई होती थी। इसके अलावा, महल परिसर के अंदर ही एक बड़ा संस्कृत कॉलेज भी चलता था, जहां देश के अलग-अलग राज्यों से सैकड़ों छात्र शिक्षा लेने आते थे।

भूल-भुलैया वाला सुरक्षा चक्र

महल का नक्शा इस तरह से तैयार किया गया था कि कोठियों (कमरों) और दरवाजों की संख्या लगभग बराबर थी। इसकी जटिल संरचना के कारण कोई भी बाहरी दुश्मन या चोर यदि महल के अंदर बिना इजाजत घुस जाता था, तो वह कमरों और दरवाजों के चक्रव्यूह में उलझकर रह जाता था। उसे बाहर निकलने का रास्ता ही नहीं मिलता था।

एक कानून और खत्म हो गई सारी चमक

यह राजपरिवार सिर्फ टैक्स नहीं वसूलता था, बल्कि कुएं-तालाब खुदवाने और मंदिर बनवाने जैसे सामाजिक काम भी करता था। लेकिन, देश आजाद होने के बाद जैसे ही जमींदारी उन्मूलन कानून लागू हुआ, अमावा स्टेट का सारा रुतबा खत्म हो गया। राजपरिवार के अधिकार छिन गए और जमीनें सरकार के पास चली गईं। देखरेख न होने से यह आलीशान महल धीरे-धीरे खंडहर में बदल गया। अब स्थानीय लोग इसे संवारकर पर्यटन स्थल बनाने की मांग कर रहे हैं।

नालंदा से टेकारी तक बजता था डंका

इस रियासत के राजा हरिहर नारायण प्रसाद सिंह का साम्राज्य नालंदा से लेकर टेकारी तक फैला हुआ था। उस जमाने में भी इस स्टेट की सालाना कमाई करीब 50 हजार रुपए थी। राजा का रसूख इतना था कि देश के ज्यादातर बड़े तीर्थ स्थलों पर आम लोगों के ठहरने के लिए अमावा स्टेट की अपनी निजी धर्मशालाएं हुआ करती थीं।

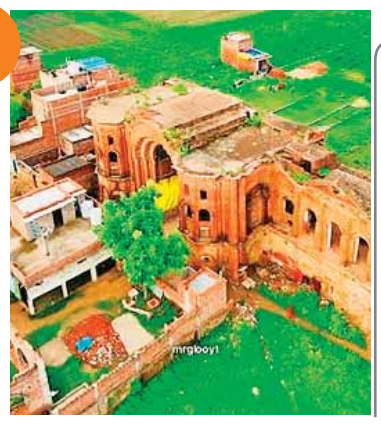

सुरक्षा और बनावट थी बेहद खास

महल का ढांचा बेहद सोच-समझकर तैयार किया गया था। इसमें जनता की फरियाद सुनने के लिए भव्य दरबार, मेहमानों के कमरे, अनाज के बड़े गोदाम, अस्तबल और विशाल रसोई मौजूद थी। सुरक्षा व्यवस्था इतनी पुख्ता थी कि पहरेदारों, नौकरों और रसोइयों के लिए महल के ठीक पास ही एक पूरी बस्ती बसाई गई थी। मकसद यह था कि कर्मचारी अपने परिवार की चिंता छोड़कर 24 घंटे पूरी ईमानदारी से महल की सुरक्षा कर सकें।

पर्यटकों की पहली पसंद बना यह पार्क

हैदराबाद। आधुनिकता और विकास की दौड़ में तेजी से आगे बढ़ रहे हैदराबाद के बाहरी इलाके में बना देश का सबसे बड़ा इको-रिक्रिएशनल पार्क इन दिनों आम जनता और प्रकृति प्रेमियों के बीच भारी चर्चा का विषय बना हुआ है। लगभग 150 एकड़ में फैले इस एक्सपीरियम इको पार्क में एक ऐसी प्राकृतिक धरोहर है, जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग पहुंच रहे हैं। यहां मौजूद है एक बेहद दुर्लभ और प्राचीन पेड़, जिसकी कीमत लगभग 85 लाख रुपए आंकी गई है।

85 लाख रुपए का पेड़ और 85 देशों के दुर्लभ पौधे

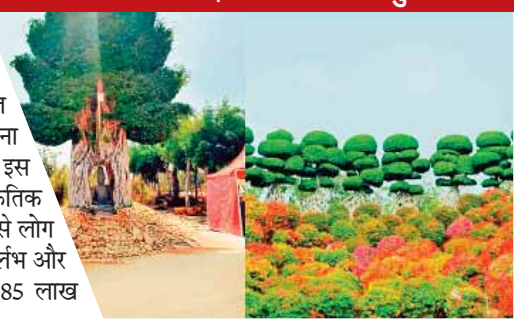

इस विहंगम पार्क को यूनिक ट्रीज़ कंपनी के संस्थापक रामदेव राव ने अपने 25 वर्षों के कड़े परिश्रम, शोध और वृक्षों के प्रति अपने जुनून से तैयार किया है। उन्होंने दुनिया के 85 से अधिक देशों जैसे अर्जेंटीना, मेक्सिको, इटली और स्पेन से लगभग 25,000 दुर्लभ और प्राचीन प्रजातियों के पेड़-पौधों को विशेष कंटेनरों और विमानों के ज़रिए सुरक्षित तरीके से भारत लाकर यहां स्थापित किया है।

सिर्फ पेड़ ही नहीं, आकर्षणों का समंदर है

करीब 150 करोड़ रुपए की भारी लागत से बने इस वर्ल्ड-क्लास इको-पार्क में केवल महंगे पेड़ ही नहीं, बल्कि पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई बेहतरीन आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर भी तैयार किए गए हैं। इनमें प्रमुख आकर्षण इस प्रकार हैं:

कृत्रिम बीच: 12 एकड़ में फैली भारत की पहली मानव-निर्मित कृत्रिम बीच।

ग्लो गार्डन: रात के समय रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाता हुआ एक खूबसूरत ग्लो गार्डन।

ज़िपलाइन: एडवेंचर के शौकीनों के लिए 1 किलोमीटर लंबी चार-दिशाओं वाली ज़िपलाइन।

स्नो पार्क: बच्चों और परिवारों के मनोरंजन के लिए एक भव्य इनडोर स्नो पार्क।

टेंशन और झगड़े का सबसे पुराना इलाज, जिसे साइंस ने भी अब माना!

लंदन। टेंशन और झगड़े से बचने के लिए सिर्फ हम इंसान ही नहीं, बल्कि हमारे पूर्वज माने जाने वाले वनमानुष भी एक-दूसरे को 'जादू की झप्पी' देते और चूमते थे। ब्रिटेन की डरहम यूनिवर्सिटी की नई रिसर्च में यह खुलासा हुआ है। स्टडी के मुताबिक, चिंपैंजी और बोनोबो प्रजाति के वनमानुष खाने-पीने को लेकर होने वाले झगड़े से पहले एक-दूसरे को छूकर भरोसा जताते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि मुश्किल वक्त में गले लगाकर हिम्मत बढ़ाने का यह तरीका इंसानों में भी इन्हीं से आया है। यह आदत करीब 70 लाख साल पुरानी हो सकती है। रिसर्च टीम ने कांगो और जाम्बिया में रहने वाले चिंपैंजी और बोनोबो पर यह स्टडी की। उन्हें मूंगफली दी गई ताकि देखा जा सके कि वे अपने प्राकृतिक माहौल में कैसे खाते हैं। नतीजे काफी हैरान करने वाले थे। हमेशा गुस्से में रहने वाले चिंपैंजी भी खाना सामने आने से पहले एक-दूसरे के करीब आए। जिन वनमानुषों ने एक-दूसरे को छुआ या गले लगाया, उन्होंने बाद में बिना किसी मारपीट के बड़े आराम से साथ बैठकर मूंगफली खाई।

खिलाड़ियों जैसी टीम स्पिरिट

प्रोफेसर जन्ना क्ले ने इनकी इस आदत की तुलना फुटबॉल खिलाड़ियों से की है, जो बड़े मैच से पहले एक घेरा बनाकर खड़े होते हैं। उन्होंने बताया कि टेंशन वाले माहौल से ठीक पहले ये वनमानुष एक-दूसरे के पास आते हैं और गले लगकर भरोसा दिलाते हैं कि 'हम सब एक हैं'। जिन झुंडों में आपसी तालमेल अच्छा था, वहां वनमानुषों ने एक के बाद एक कई साथियों को लगातार गले लगाया। वैज्ञानिकों ने इसे रीएश्योरेंस ट्रेन का नाम दिया है।

बोलने से भी पुराना है 'टच' का अहसास

यह दिलचस्प रिसर्च 'प्रोसीडिंग्स ऑफ द रॉयल सोसाइटी बी' जर्नल में छपी है। रिसर्च से जुड़े डॉ. जेक बूकर बताते हैं कि छूकर अपनी बात कहना, बातचीत का सबसे पुराना तरीका है। यह इंसानों के बोलना सीखने से भी बहुत पहले का है। इसलिए, जब आप किसी मुश्किल वक्त में अपने दोस्त के कंधे पर हाथ रखते हैं या उसे गले लगाते हैं, तो असल में आप अपने पूर्वजों की उसी आदत को दोहरा रहे होते हैं, जो लाखों साल पुरानी है।

भेड़ियों से भेड़ों को बचाएगी लोहे की पोशाक, तोड़ देगा शिकारी का जबड़ा

वियना। पूरी दुनिया में भेड़ पालन करने वाले किसान हमेशा जंगली भेड़ियों और खूंखार शिकारियों के आतंक से परेशान रहते हैं। रात के अंधेरे में शिकारी जानवर अक्सर अचानक हमला कर मासूम भेड़ों को अपना निवाला बना लेते हैं।

इस नुकसान से बचने के लिए किसान सदियों से या तो ऊंची बाड़ लगाते आए हैं या फिर खूंखार शिकारी कुत्तों का सहारा लेते हैं। लेकिन, जरा सोचिए, अगर कोई शख्स मध्यकालीन युग के योद्धाओं की तरह इन बेजुबान भेड़ों को ही एक अभेद्य लौह सुरक्षा कवच पहना दे, तो नजारा कैसा होगा! यह सुनने में भले ही काल्पनिक कहानी लगे, लेकिन यूरोपीय देश ऑस्ट्रिया के एक बुजुर्ग किसान और आविष्कारक ने इस अजीब तरकीब को सच में हकीकत बना दिया है। उन्होंने भेड़ियों के दांतों का मुकाबला करने के लिए भेड़ों के लिए एक स्पेशल बॉडी आर्मर तैयार किया है, जिसे देखकर लोग हैरान हैं। यह अनोखा मामला दक्षिणी ऑस्ट्रिया के फिलाच शहर के रहने वाले रुडोल्फ शौबाक की है। रुडोल्फ पिछले कई सालों से अपने देश और पड़ोसी देश जर्मनी में भेड़ियों के बढ़ते हमलों और उससे मरती भेड़ों की खबरों से बेहद दुखी थे। उन्होंने ठान लिया कि वे इन बेजुबान जानवरों को बचाने के लिए कुछ अलग करेंगे। लगातार 3 साल की कड़ी मेहनत, रिसर्च और कई तरह के डिजाइनों को आजमाने के बाद उन्होंने आखिरकार भेड़ों के लिए एक कामयाब प्रोटोटाइप यानी सुरक्षात्मक पोशाक तैयार कर ली। रुडोल्फ ने ऑस्ट्रिया की ऊंची आल्प्स पहाड़ियों पर बने कई फार्मों में भेड़ों को यह अजीबोगरीब कपड़ा पहनाकर इसका बाकायदा टेस्ट भी किया है, जिसके बाद से इस पूरे प्रोजेक्ट को लेकर एक नया बखेड़ा खड़ा हो गया है। वे एक ऐसा हल्का और मजबूत कवच बनाना चाहते थे, जिसे पहनकर भेड़ें बिना किसी परेशानी के पहाड़ों पर घूम सकें, दौड़ सकें और घास चर सकें, लेकिन भेड़िए चाहकर भी उन्हें काट न पाएं। इसके लिए उन्होंने एक बेहद हल्के और मजबूत प्लास्टिक के जाल का इस्तेमाल किया।

जिसके ऊपर चारों तरफ नुकीले और तेज कांटे लगाए गए हैं। रुडोल्फ का दावा है कि जब भी कोई भूखा भेड़िया भेड़ पर हमला करने के लिए अपना मुंह खोलेगा, तो ये नुकीले कांटे उसके मसूड़ों और जीभ में इतनी बुरी तरह चुभेंगे कि दर्द के मारे वह तुरंत भेड़ को छोड़ देगा। उन्होंने स्थानीय मीडिया को बताया, 'भेड़िया एक बहुत ही समझदार और चालाक जानवर है, मुझे पूरा यकीन है कि एक बार कांटों का स्वाद चखने के बाद वह दूसरी बार किसी भेड़ को छूने की हिम्मत भी नहीं करेगा।'

हालांकि, रुडोल्फ का यह अनोखा आविष्कार आम जनता और खुद भेड़ पालने वाले किसानों को बिल्कुल रास नहीं आ रहा है। लगभग सभी लोगों ने इस तरकीब को बकवास, अव्यावहारिक और बेअसर बताया है। करीब 1,000 भेड़ें रखने वाले एक बड़े किसान रेने क्रूगर ने चेतावनी देते हुए कहा कि समय के साथ भेड़ के बड़े बाल इस प्लास्टिक के जाल में बुरी तरह उलझ जाएंगे, जिससे उन्हें भयंकर दर्द होगा। उन्होंने यह भी कहा कि भेड़िए बेवकूफ नहीं होते, अगर उन्हें शरीर पर कांटों का कवच दिखेगा तो वे अपनी रणनीति बदलकर भेड़ के खुले हिस्सों जैसे उसके पैर, मुंह या आंखों पर हमला कर उसे मार डालेंगे। वहीं, कृषि संगठनों का कहना है कि हजारों भेड़ों को इतनी महंगी पोशाक पहनाना किसी भी किसान के बजट में नहीं है। फिलहाल बढ़ते विरोध को देखते हुए रुडोल्फ ने ऑस्ट्रिया में इसका टेस्ट रोक दिया है और वे दुनिया के किसी दूसरे कोने में इस जादुई पोशाक का लाइव टेस्ट की जगह ढूंढ रहे हैं।

जेल जाने का डर, शख्स ने किया अपना अंतिम संस्कार का नाटक

बीजिंग। शराब के नशे में ड्राइविंग करने वाले एक शख्स ने जेल की सजा से बचने के लिए ऐसा खौफनाक और अजीबोगरीब ड्रामा रचा कि पुलिस खुद भी हैरान रह गई। शराब पीकर गाड़ी चलाने वाले लोग अक्सर पुलिस से बचने के लिए तरह- तरह के बहाने बनाते हैं, लेकिन इस बंदे ने तो हद ही कर दी। दरअसल, चीन के हेनान प्रांत में ड्रिंक एंड ड्राइव के मामले में फंसे एक शख्स ने गिरफ्तारी से बचने के लिए अपनी ही मौत का झूठा नाटक रच दिया। हैरानी की बात है कि बंदे ने खुद ही ताबूत खरीदा...घर में खाली दवा की बोतलें बिखराईं और फिर खुद को 'मरा' हुआ बताकर फरार हो गया।

पिछले साल जून में उसने कथित तौर पर ओवरडोज का नाटक किया, फिर अपनी मौत का नाटक रचने के लिए उसने बाजार से एक ताबूत यानी कफन खरीदा।

इसके बाद घर के चारों तरफ खाली दवा की बोतलें फैला दीं, ताकि सबको लगे कि उसने जहर खा लिया है। यही नहीं, बिना हिले-डुले अपनी सांस रोककर खुद ताबूत में लेटा रहा और शरीर को ठंडा दिखाने के लिए कूलिंग इक्विपमेंट का इस्तेमाल किया। इस बीच उसके परिवार ने दावा किया कि, ओवरडोज से उसकी मौत हो गई है। यही नहीं, रात होने से पहले सी की मां और दादी ने उसे दफनाने का नाटक भी कर डाला और वो खुद छिपकर दक्षिण-पश्चिमी चीन के युन्नान प्रांत भाग गया, जहां उसने काम की तलाश की।

कफन, ताबूत और मौत का झूठा ड्रामा

सी नाम के इस शख्स ने जो किया उसने हर किसी को चौंका दिया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, ड्रिंक एंड ड्राइव के मामले में सी नाम का यह शख्स पहले भी दो बार पकड़ा जा चुका है। मामले की जांच के दौरान उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया था। चीनी कानून के तहत, शराब पीकर गाड़ी चलाने को खतरनाक ड्राइविंग का आपराधिक अपराध माना जा सकता है। इसमें लाइसेंस रद्द होने, 6 महीने तक की जेल और जुर्माना जैसी सजाएं हो सकती हैं। उसे लग रहा था कि इस बार अगर वो पकड़ा गया तो बचना मुश्किल है। ऊपर से सिर पर कर्ज भी था। सरकारी वकीलों के मुताबिक, उसे लगा था कि सजा हुई तो जिंदगी बर्बाद हो जाएगी, बस फिर क्या था बंदे ने गिरफ्तारी से बचने के लिए फिल्मी तरीके से एक साजिश रच डाली।

सच्चाई सामने आने पर मुश्किल में फंसा परिवार

पुलिस जब मौके पर पहुंची तो उन्हें पता चला कि ताबूत पहले ही दफनाया जा चुका था, लेकिन कई बातों से तुरंत शक पैदा हुआ, क्योंकि कोई मेडिकल रिपोर्ट या मौत का सर्टिफिकेट नहीं था। पुलिस ने जांच के दौरान जब सीसीटीवी फुटेज और बैंक रिकॉर्ड खंगाले तो सारा सच खुद-ब-खुद सामने आ गया। पुलिस ने युन्नान प्रांत से 'जिंदा' घूम रहे उस शख्स को दबोच लिया, फिलहाल कोर्ट ने उसे 5 महीने की सजा सुनाई है। इस पूरे मामले में पुलिस को गुमराह करने के चलते सी की मां और दादी पर भी आपराधिक मामले दर्ज किए गए हैं।

यहां मंडप में होता है तालाब का विवाह, पंडित पढ़ते हैं मंत्र, फिर इस पौधे से रचाई जाती है शादी

मधुबनी। मिथिला में जब कोई नया पोखर या इनार खुदवाया जाता है तो उसे 'कुंवारा' माना जाता है। शादी किए बिना उसका पानी पीना-खेती में लगाना मिथिला में अशुभ मानते हैं। मान्यता है कि शादी के बाद ही तालाब 'पवित्र' होकर जल देता है और गांव में सूखा नहीं पड़ता है। दरभंगा, मधुबनी, सहरसा साइड में बड़े जमींदार या मुखिया नया पोखर खुदवाते हैं तो पोखरे का बियाह जरूर होता है। तालाब को दूल्हा, दुल्हन के लिए पीपल, बरगद या केला का पौधा पास में लगाया जाता है। जहां पंडित मंत्र पढ़ते हैं और भोज- भात का आयोजन किया जाता है। मिथिलांचल में पग -पग पोखर की कहावत भी है, यानी कि यहां हर आधा किलोमीटर, 1 किलोमीटर पर कोई ना कोई जलाशय यानी कि तालाब जरूर होता है। तालाब को मैथिली भाषा में पोखर कहते हैं। जब कोई नया तालाब यहां के किसी जमींदार या फिर मुखिया के द्वारा खुदवाया जाता है तो वह सिर्फ उसका नहीं रहता है, बल्कि वह पूरे समाज का होता है। मंदिर के पास या फिर कोई ऐसी जगह पर ही होता है। ताकि सब इसका लाभ ले सके, उससे पहले तालाब का विवाह होता है, जिसे पोखरी विवाह कहते हैं। जिसे शास्त्र में मानें तो 'जल संस्कार' भी कहा जाता है।

एफआईआर

फिल्मी पर्दे पर आपने गैंग्स ऑफ वासेपुर की कहानी देखी होगी, लेकिन सरगुजा में इसी गैंग से जुड़े गैंगस्टरों के 13 साल तक छिपकर रहने की कहानी उससे कम चौंकाने वाली नहीं है। धनबाद में हत्या और गैंगवार के मामलों में वांछित और सजायाफ्ता अपराधियों ने सरगुजा को अपनी सुरक्षित पनाहगाह बनाया। यहां सिर्फ पहचान छिपाकर रहे ही नहीं, बल्कि कारोबार खड़ा कर संपत्ति बनाई और अपना नया साम्राज्य भी खड़ा कर लिया। इस पूरे नेटवर्क के पीछे कौन था, गैंगस्टरों को सरगुजा तक कौन लाया, किसने उन्हें संरक्षण दिया और फर्जी पहचान के सहारे यहां रहने में किस-किस ने मदद की धनबाद पुलिस की दबिश के बाद अब इन सवालों के जवाब तलाशे जा रहे हैं। हरिभूमि की पड़ताल में सामने आया है कि यह महज एक गैंगस्टर के छिपकर रहने का मामला नहीं, बल्कि सरगुजा में अपराधियों के एक बड़े नेटवर्क के पैर पसारने की कहानी है, जिसकी कई परतें अभी खुलना बाकी हैं।

सरगुजा में 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' का अंडरग्राउंड साम्राज्य!

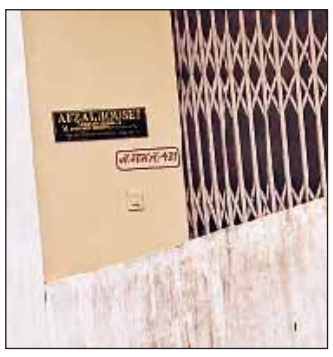

● अंबिकापुर से नदीम अंसारी

धनबाद के डायमंड क्रॉसिंग के समीप हुए हत्याकाण्ड में पुलिस ने उस समय साबीर आलम, शाहिद आलम, जावेद खान सहित अन्य लोगों को गिरफ्तार किया था और इस मामले में धनबाद हाईकोर्ट में सुनवाई चल रही थी। वर्ष 2013 में सुनवाई के दौरान कोर्ट परिसर से साबीर आलम, जावेद पुलिस को चकमा देकर फरार हो गए थे। वर्ष 2018 में कोर्ट ने शाहिद आलम व अन्य आरोपियों को उम्र कैद की सजा सुनाई है, हालांकि वर्ष 2013 में सुनवाई के दौरान कोर्ट से पुलिस को चमका देकर साबीर आलम फरार हो गया था। इस मामले में आलम और उसके सहयोगी को झारखंड के हाईकोर्ट ने भगोड़ा घोषित करते हुए आजीवन कारावास की सजा दी थी और संपत्ति कुर्की का भी आदेश दिया गया था।

घटनाक्रम की शुरुआत 18 अक्टूबर 2001 को उस समय हुई थी, जब अपनी पुरानी दुश्मनी और वर्चस्व की लड़ाई के कारण गैंगस्टर साबीर आलम, शाहिद आलम ने अपने साथियों के साथ मिलकर वासेपुर के डॉन फहीम खान की मां नजमा खातून और चाची शहनाज की धनबाद के डायमंड क्रासिंग पर बेरहमी से हत्या कर दी थी। इसी हत्याकांड के बाद गैंगस्टर पिछले 13 सालों से शहर में रह रहा था। 29 जून की रात आठ बजे जब धनबाद की पुलिस बरोरा थाना प्रभारी उप निरीक्षक अभय कुमार के नेतृत्व में मुखबिर से मिली सूचना के बाद गैंगस्टर साबीर आलम को पकड़ने पहुंची थी। इस दौरान साबीर ने शोर मचाकर कार्रवाई का विरोध किया और लोगों की भीड़ एकत्रित होने पर आरोपी पुलिस को चकमा देकर अपने साथी जावेद के साथ फरार हो गया था। इसी के बाद सरगुजा में गैंगस्टर के छिपकर रहने की पुष्टि हुई थी, जिसके बाद हड़कंप मच गया था।

13 साल से छिपे थे गैंगस्टर, कारोबार खड़ा किया पहचान बदली, अब खुल रहे एक-एक कर राज

गैंस्टर शाकिब अफजल भी छिपा था सरगुजा में

सरगुजा और गैंग्स ऑफ वासेपुर के गैंगस्टरों के कनेक्शन की परत अब लगातार खुलती जा रही है। इस बीच एक और हैरान कर देने वाली जानकारी सामने आई। गैंग्स ऑफ वासेपुर की टीम का एक और गैंगस्टर शाकिब अफजल भी पहले 13 सालों से शहर में ही छिपा हुआ था। शाकिब अफजल पर वर्ष 2004 में धनबाद के डॉन फहीम खान के दफ्तर पर एके-47 और पिस्टल से हमले का आरोप है। इस मामले में साबीर आलम और उसके भाइयों पर जेल में रहकर हमला कराने का भी आरोप लगा था। हमले में एक निजी सुरक्षाकर्मी और पुलिसकर्मी की मौत हो गई थी। इस हत्याकांड में अपराध दर्ज होने के बाद से ही शाकिब अफजल झारखंड से फरार हो गया था। कोर्ट के निर्देश पर उसका भी घर कुर्क हुआ, जिसके बाद वह अंबिकापुर पहुंचा और अपनी पहचान बदल ली। इस दौरान शहर से लगे लालमाटी इलाके में जंगल किनारे बड़ा सा मकान बनाकर रहने लगा। शाकिब अफजल होटल चलाने के साथ ही जमीन का कारोबार करता था और साबीर आलम व बैदुल खान के कारोबार को भी संभाल रहा था। जिस दिन झारखंड पुलिस साबिर आलम को पकड़ने के लिए सरगुजा पहुंची और आरोपियों को पकड़ने में नाकाम हुई, उसी समय इस बात की भनक लगते ही शाकिब अफजल भी सरगुजा से फरार हो गया।

खुलने बाकी हैं अभी कई और राज

सरगुजा और गैंग्स ऑफ वासेपुर कनेक्शन में अभी और भी कई राज खुलने बाकी हैं। गैंगस्टर को शहर में लाने के बाद उनकी पहचान छिपाने के लिए किस तरह के दस्तावेज तैयार किए और दस्तावेज तैयार करने में किन किन लोगों ने सहयोग किया, यह अब तक सामने नहीं आई है। इसके साथ ही उनका कारोबार क्या सिर्फ बस-एम्बुलेंस संचालन, जमीन कारोबार तक ही सीमित था या फिर और भी कई कारोबार चल रहे थे। आरोपियों को किस तरह सरगुजा लाया गया यह भी एक बड़ा सवाल है। इन सभी सवालों का जवाब अब गैंगस्टर साबीर आलम, जावेद खान, शाकिब अफजल के गिरफ्तार होने के बाद ही सामने आ सकेगा।

छिपकर रह रहा था शहर में, बनाया साम्राज्य

आरोपी साबीर आलम और उसका सहयोगी जावेद कोर्ट से फरार होने के बाद लगातार कई राज्यों में पुलिस से बचते फिर रहे थे। फिलहाल इस बात की पुष्टि नहीं हुई है कि गैंगस्टर कब सरगुजा आया, लेकिन बताया जा रहा है कि 13 साल पहले दोनों अंबिकापुर आए थे। उन्हें सरगुजा में लाने और सुरक्षित पनाह देने का काम शहर के एक बड़े व्यवसायी और बस संचालक बैदुल खान ने किया। बैदुल खान और साबीर आलम के बीच रिश्तेदारी की भी बात सामने आई है। अपनी रिश्तेदारी के कारण ही वह सरगुजा तक पहुंचा था। दोनों ने मिलकर बस संचालन का कार्य शुरू किया। इस दौरान उन्होंने बसों के साथ ही एम्बुलेंस का संचालन किया। सरगुजा में रहते हुए साबीर आलम ने अपना एक शानदार मकान भी तैयार किया। यही वजह है कि कोतवाली पुलिस ने गैंगस्टर को संरक्षण देने और उसके साथ कारोबार करने के मामले में बस संचालक बैदुल खान और अन्य लोगों के खिलाफ बीएनएस की 249 के तहत अपराध दर्ज कर लिया है। फिलहाल बैदुल खान फरार चल रहा है।

पुलिस ने कसना शुरू किया शिकंजा

पुलिस ने गैंगस्टर को पनाह देने के मामले में एक तरफ बैदुल खान के खिलाफ अपराध दर्ज किया तो वहीं आरोपियों को भगाने और उनका सहयोग करने वालों के खिलाफ झारखण्ड पुलिस की ओर से भी अपराध दर्ज कराया गया है। धनबाद से बरोरा थाना प्रभारी उप निरीक्षक अभय कुमार की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों हबीबनगर नया बस्ती निवासी 30 वर्षीय जुनैद खान आ.मोहम्मद जाहिद खान व 59 वर्षीय मोहम्मद जाहिद खान आ. मोहम्मद अयुब खान पिता पुत्र के खिलाफ बीएनएस की धारा 221, 132, 126(2), 296(बी), 351(3), 263 (ई), 352, 3(5) के तहत गिरफ्तार कर उन्हें जेल भेज दिया है। आरोप है कि पिता पुत्र ने ना सिर्फ गैंगस्टर को भागने में सहयोग किया, बल्कि मोहल्ले के सभी सीसीटीवी कैमरों से सुबूत को अपने प्रभाव के दम पर हटवा दिया। झारखंड पुलिस के साथ ही अब सरगुजा की पुलिस भी सरगुजा में छिपे गैंगस्टरों की तलाश में जुट गई है।

कोई कैसे अकारण मां, पत्नी और तीन बच्चों की जान लेकर खुद अपनी जान दे सकता है? न कोई कलह-क्लेश, न कोई आर्थिक तंगी और न ही कोई ऐसा गम, जो उसे भीतर ही भीतर साल रहा हो.. फिर 1 सितंबर 2013 की उस मनहूस रात को देवनारायण देशमुख के सिर पर ऐसा क्या फिर सवार हो गया कि उसने एक-एक कर पांच जाने ले ली। पांच हत्याओं के बाद भी वह विचलित नहीं था, क्योंकि उसने इत्मिनान से अपने पिता को फोन किया और अपनी करतूत की जानकारी दी और यह भी बताया कि अब अपनी जान देने जा रहा है। देवनारायण ने ऐसा क्यों किया..यह आज भी रहस्य बना हुआ है। क्योंकि आरोपी भी जीवित नहीं रहा इसलिए पुलिस ने मामले को खात्मे में डाल दिया है।

● भिलाई से जेएम तांडी

वह खूनी रात, मां पत्नी और तीन बच्चों की बेरहमी से जान लेकर झूला फंदे पर

तेरह साल पहले हुई थी घटना, अंडा पुलिस थाना क्षेत्र की वारदात

वारदात भिलाई से 55 किमी दूर ग्राम जंजगिरी की है, जहां एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी पुष्पा (30), पुत्री कविता (08), रेणु (06), पुत्र देवेंद्र कुमार (05) और मां झामिन बाई (55) की हत्या कर दी। इसके बाद वह खुद भी फांसी के फंदे पर झूल गया। यह घटना है कि 1-2 सितंबर 2013 की दरम्यानी रात की थई, जब सभी नींद के आगोश में सो चुके थे। वारदात की वजह का अब तक कुछ भी पता नहीं चल पाया है। मिली जानकारी के मुताबिक 35 वर्षीय देवनारायण देशमुख कैटरिंग और खेती किसानी का काम करता था। कुछ दिन से वह काम पर भी नहीं जा रहा था। घटना के दिन रात में जब परिवार वाले सो रहे थे, तो उसने एक-एक कर सभी पर हथौड़े (घन) से ताबडतोड़ वार किया और मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद जमीन पर पड़े शव को लांघ कर दूसरे कमरे में गया, जहां छत की हुक में फंदा बनाकर फांसी पर झूल गया। घटना की जानकारी पूरे गांव में आग की तरह फैल गई। इस वरादात की खबर उसके चचेरे भाई ने पुलिस थाने में दी। मामले की जानकारी लगते ही पुलिस महकमे में भी खासी खलबली मच गई थी। पुलिस के कई आला अफसरों ने एक के बाद एक गांव पहुंचकर घटना से जुड़े हर पहलुओं के बारे में जानने का प्रयास किया, लेकिन हत्या के कारणों का अब तक कुछ पता नहीं चल पाया। इधर पुलिस ने पिता ज्ञान सिंह से पूछताछ की, तो उसने बताया कि देवनारायण 10-15 दिनों से काम पर नहीं जा रहा था। 31 अगस्त शनिवार 2013 को गांव पहुंचने पर उसने बताया कि तबियत कुछ ठीक नहीं है, इसलिए काम पर नहीं जा रहा है।

बरामदे में हर तरफ खून ही खून

राजकुमार घर की दीवार फांदकर भीतर घुसा। बरामदे से लगे दोनों कमरे के दरवाजे खुले थे। एक कमरे में बिस्तर पर आरोपी की पत्नी व तीनों बच्चों का खून से लथपथ शव पड़ा था। बाजू के कमरे में उसकी मां झामिन बाई का शव पलंग के किनारे पड़ा था। सभी के सिर पर हथौड़े के जोरदार वार के निशान थे। इसके अलावा आरोपी के घटना को अंजाम देने के पहले चार दिन से नहीं सोने की भी बात सामने आई थी।

मानसिक रोगी था

पुलिस ने बताया कि आरोपी देवनारायण देशमुख करीब 15 वर्ष पूर्व मानसिक रोगी था। यह स्थिति करीब 5 माह तक रही रही। पास के गांव आमटी में एक बाबा ने दवा बनाकर दी। जिसे महीने भर पीने के बाद वह ठीक हो गया। मानसिक अस्वस्थता के दौरान राजनांदगांव चला गया था। यहां लाल बाग पुलिस ने किसी मामले में अपराध दर्ज करते हुए उसे जेल भेज दिया था। परिजनों को इसकी जानकारी लगने पर उसे जमानत पर रिहा कराया था।

आंखों में ही रह गए कई सवाल

एक ही परिवार के 6 लोगों की मौत के बाद से जंजगिरी में माहौल गमगीन हो गया था। घटनास्थल देखने के लिए लोगों की भीड़ जमा होने लगी थी। लोग घरों की छतों पर चढ़कर कारणों के बारे में जानने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें संभालने पुलिस को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी थी। घटना को लेकर पूछने पर भी कोई कुछ भी बताने की स्थिति में नहीं था। शवों को पीएम के लिए जिला अस्पताल दुर्ग रवाना करने के बाद ही भीड़ को मकान के भीतर प्रवेश करने दिया गया। अंदर का मंजर देखने के बाद लोगों की आंखों में कई सवाल थे, लेकिन सभी ने चुप्पी साध ली थी।

हत्या के बाद किया पिता को फोन

आरोपी देवनारायण ने खुदकुशी से पहले रात 3.24 बजे अपने शिक्षक पिता ज्ञान सिंह देशमुख को फोन किया। उसने बताया कि मां झमिन बाई, पुष्पा और 4 वर्षीय पुत्र देवेन्द्र को मार दिया। देवनारायण ने बेटी 10 वर्षीय कविता 8 वर्षीय वेणु की हत्या की जानकारी नहीं दी। इसके पहले कि ज्ञान सिंह कुछ पूछ पाते आरोपी बेटे ने यह कहते हुए फोन काट दिया कि वह भी अब खुदकुशी करने जा रहा है। घबराए, सहमे पिता ने अंबिकापुर में पदस्थ आरक्षक बेटे राजनाथ सिंह को और उसने जंजगिरी की ही दूसरी बस्ती में रहने वाले चाचा गिरधर देशमुख के बेटे राजकुमार को इसकी जानकारी दी थी।

पति-पत्नी के बीच का आपसी विवाद एक सिरफिरे व्यक्ति को क्रूर कातिल बना देगा, यह किसी ने नहीं सोचा था। स्कूल से दोपहिया से लौट रही पत्नी को पति ने पहले नेशनल हाईवे पर बोलेरो से रौंद डाला। यही नहीं, जब उसने देखा की पत्नी की सासें अब भी चल रही है तो उसने लोहे की रॉड से ताबड़तोड़ वार करते हुए सड़क पर ही पत्नी की हत्या कर दी।

● मोहला से एनिश पुरी गोस्वामी

यू ट्यूब देखकर कातिल पति ने बनाई थी पुलिस से बचने की प्लानिंग

पहले बोलेरो से रौंदा, सासें चलती देख रॉड से पीट-पीटकर पत्नी को मार डाला

जांच होने पर यह बात सामने आई कि शेरपार हाई स्कूल में पदस्थ गणित की व्याख्याता की मौत सड़क हादसे में नहीं हुई है। इंजीनियर पति ने प्लानिंग के तहत इस वारदात को अंजाम दिया था। 22 मार्च 2026 शनिवार को स्कूल से छुट्टी के बाद व्याख्याता अपने स्कूल में ही पदस्थ महिला प्यून के साथ स्कूटी से अपने घर दुर्ग लौट रही थी। इसी समय दल्ली राजहरा मानपुर नेशनल हाईवे 930 में इंजीनियर पति अपनी पत्नी को रास्ते से हटाने मौत बन के खड़ा हुआ था। उसने हाईवे में पत्नी को पहले बोलेरो वाहन से रौंद डाला, सांस चलने पर रॉड से पीट-पीटकर उसकी हत्या कर दी। शुरूआत में पुलिस प्रशासन और आम नागरिक इस घटनाक्रम को एक सामान्य सड़क हादसा समझ रहे थे, लेकिन परिजनों के द्वारा हत्या की आशंका व्यक्त की गई। पुलिस की गहन जांच में मामला सड़क हादसे का नहीं, इंजीनियर पति के द्वारा रची गई दुर्दांत हत्याकांड में परिवर्तित हो गया।

बच्चों ने पुलिस को दी हत्याकांड की लीड

22 मार्च 2026 घटना के दिन आरोपी शीशपाल वासनिक और साथी कयामुद्दीन खान सुबह 5 से 6 बजे के बीच बोलेरो वाहन से शेरपार गांव पहुंच गए। दोनों आरोपी हाईवे की रेकी करते हुए हाई स्कूल में अध्यनरत बच्चों से बोलेरो वाहन में बैठकर व्याख्याता बरखा वासनिक के आने जाने के संबंध में पूछताछ करते रहे। सीसीटीवी फुटेज बोलेरो नंबर स्कूल के बच्चों के दिए गए बयान के बाद दल्ली राजहरा पुलिस ने जांच दोबारा शुरू की, जहां से पता चला कि पति पत्नी के बीच अनबन थी। इस बात से इंजीनियर शीशपाल वासनिक नाराज था। इसी के कारण पत्नी को मारने की साजिश रची, बरखा के आने जाने की टाइमिंग, रास्ता, रोजमर्रा की आदतों की रेकी कर अन्य साथी कयामुद्दीन को 60 हजार देकर गाड़ी में रौदने के लिए अपने साथ शामिल किया।

छुट्टी होने के बाद वापस दल्ली राजहरा दुर्ग की ओर जा रहे थे

आरोपियों को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजने वाली दल्ली राजहरा पुलिस जांच के अनुसार मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी जिले में मौजूद ग्राम शेरपार हाई स्कूल में पदस्थ गणित की व्याख्याता बरखा वासनिक (35) तथा मृत्य मथुरा मण्डावी 22 मार्च 2026 शनिवार शाम 4 बजे छुट्टी होने के बाद नेशनल हाईवे 930 से स्कूटी में सवार होकर वापस दल्ली राजहरा दुर्ग की ओर जा रहे थे। इसी दौरान दल्ली राजहरा थाना क्षेत्र के हितकसा मोड़ के मंदिर के पास दोनों स्कूटी सवार महिलाओं को एक अज्ञात वाहन ने रौंद डाला। दर्दनाक हादसे में व्याख्याता बरखा वासनिक की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं मृत्य मथुरा मण्डावी को गंभीर चोट आई। अज्ञात गाड़ी के रौंदने से मौत होने का मामला पंजीबद्ध कर दल्ली राजहरा पुलिस विवेचना शुरू की ही थी कि परिजनों ने अपनी बेटी की हत्या किए जाने की आशंका व्यक्त की। इस दिशा में जब जांच की गई तो इस हत्याकांड के पीछे रूआबांधा दुर्ग विद्युत मंडल में पदस्थ सब इंजीनियर पति शीशपाल वासनिक व एक सहयोगी आरोपी कयामुद्दीन पिता कैमुल हसन (24), पुरानी बस्ती वार्ड नंबर 21 सुपेला भिलाई निकले।

रॉड से पीट-पीटकर मार डाला

स्कूल से छुट्टी के बाद बरखा वासनिक स्कूल के प्यून के साथ स्कूटी से दुर्ग लौट रही थी। वह दल्ली राजहरा के करीब हितकसा मोड़ के मंदिर के पास पहुंचे थे, तभी इंजीनियर पति शीशपाल वासनिक के कहने पर पीछे से बिना नंबर प्लेट के बोलेरो वाहन से कयामुद्दीन ने टक्कर मार दी। इससे बरखा और प्यून मथुरा मंडावी गंभीर रूप से घायल हो गए, इस दौरान बरखा की सांसे चल रही थी। इसके बाद शीशपाल बोलेरो से नीचे उतरा, गाड़ी में रखे लोहे के रॉड से उस पर ताबड़तोड़ हमला किया। जिसके चलते शिक्षिका की मौके पर ही मौत हो गई।